P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-2* ISSUE-10* January- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

त्रिलोचन के काव्य में व्यक्त किसान – चेतना

प्रमोद कुमार प्रसाद
असिस्टेंट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
जे. के. कॉलेज,
पुरुलिया

सारांश

आज साहित्य में स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, सत्ता–विमर्श और अल्प संख्यक विमर्श की मांग जिस तेजी के साथ बढ़ी है, उसी तेजी से किसान विमर्श की माँग भी बढ़ रही है। 'किसान–चेतना' उत्तर आधुनिक विमर्शों की नई संकल्पना है। भारतीय समाज का किसान जो आदिकाल से लेकर अब तक के समाज, साहित्य और इतिहास में निरंतर विसंगतियों, विडंबनाओं तथा आर्थिक संकटों का शिकार बनता आ रहा है। आज का किसान बाजारी व्यवस्था में अपने को मिस–फिट पा रहा है। खेती किसानों का मौजूदा संकट आसान नहीं है। यह कुदरत की मार नहीं सरकार की किसान विरोधी नीतियों का नतीजा है। किसानों के संकट का एक बड़ा कारण खेती का लागत खर्च तेजी से बढ़ना और फसल की कीमत लागत से भी कम होना है। मँहगीं लागत को पूरा करने के लिए किसान कर्ज के जाल में फँसते चले गये। किसानों की बढ़ती आत्महत्या के पीछे इस कर्ज की जाल से निकल पाने को उनकी नाउम्मीदी है। जैसे–जैसे संकट बढ़ रहा है किसानों की आत्महत्याओं के आँकडे भी बढ़ रहे हैं, दूसरी तरफ सरकार की किसान विरोधी नीतियों के चलते यह संकट हल होने के बजाय और गहराता जा रहा है। सभी सरकारे देशी–विदेशी पूँजी के हित में कम कर रही हैं। खेती किसानी की समस्या को टुकड़े–टुकड़े और मुद्देवार देखने के वजाय इसे एक बड़ी समस्या के रूप में देखना और इसका स्थाई समाधान ढूँढ़ना आज समय की माँग है।

किसानों की बढ़ती समस्याओ, आत्महत्याओं और संघर्षों पर यदि दृष्टि दौड़ाई जाए तो साहित्य में उनके जीवन को केंद्र करके उन पर सम्यक मूल्यांकन आवश्यक बन जाता है। किसान जीवन को केंद्र में रखकर य।पि त्रिलोचन से पूर्व तमाम रचनाकारों ने गद्य एवं पद्य में अपने–अपने स्तर से विवेचन–विश्लेषण करने का प्रयास किया है पर त्रिलोचन की किसान दृष्टि उनसे थोड़ी भिन्न है। त्रिलोचन ने गंवई संवेदना में किसानों के पूरे यथार्थ को अपनी कविताओं में एक नया रूप देने का सफल प्रयास किया है।

मुख्य शब्द : आधुनिकता, बाजारवाद, किसान चेतना।

प्रस्तावना

त्रिलोचन की चेतना मूलतः किसान चेतना है। प्रेमचंद की तरह उनका जन्म भी किसान परिवार में हुआ था। अतः अपनी सहज सहृदयता के कारण किसान जीवन से काफी घुले–मिले थे। प्रेमचंद भारतीय जनता की क्रांतिकारी हलचल को देखने के लिए जीवित नहीं रहे, लेकिन उन्होंने अपनी कृतियों का नायक संघर्षशील गरीब किसान, मजदूर या नीची जाति के लोगों को ही बनाया। त्रिलोचन को प्रेमचंद, निराला, केदारनाथ अग्रवाल तथा नागार्जुन की भांति गरीब किसानों, मजदूरो तथा शोषितों से विशेष प्रेम तथा गहरी सहानुभूति है। उन्होंने भी अपनी कविताओ में किसान जीवन कर व्यथा कथा को विभिन दिर्स्तकोनो से विवेचिर– विश्लेषित करते हुए पूंजीपति वर्ग के विरोध में आवाज उठाकर किसानों में क्रांतिकारी चेतना का विकास किया।

अध्ययन का उद्देश्य

वर्तमान बाजारवादी व्यवस्था का बहुत बड़ा यथार्थ किसानों की त्रासदी है। किसान जन–जीवन पहले की अपेक्षा काफी संघर्षमयी हुआ है। आज जिस तरह से नहर रेट, खेतों की जुताई दृबुआई, सिचाई, युरिया के दामों में बढ़ोत्तरी आई है, उचित दामों पर न मिलना, इससे तो यह तय हो जाता है की भारतीय समाज में यदि सबसे अधिक किसी का खस्ताहाल है तो वह भारत का किसान है। सामाजिक, आर्थिक स्तर पर जिन संघर्षों और यातनाओं के बीच किसान अपने जीवन को आगे की ओर लेकर बढ़ रहा है ऐसे में यह साफ हो जाता है कि भविष्य किसानों का नहीं बल्कि बाजार का है जो उसके भीतर गरीबी, विपन्नता के नए बीज बो रहा है। नतीजन उसके जीवन में आत्महत्या ही मानो शेष बचती है। त्रिलोचन का पूरा काव्य इसी जड़ता से किसानों को

मुक्ति की ओर ले जाता है तथा किसानों की मुक्ति में ही उनकी कवितओं का मूल ध्येय तथा इस आलेख का प्रमुख उद्देश्य है।

साहित्यावलोकन

त्रिलोचन के काव्य में मानवीय संवेदना को केंद्र में रखकर भारतीय किसान जीवन के विविध पहलुओं पर समीक्षकों ने अपने अपने विचार अपने शोध आलेखों से समझाने का प्रयास किया है। जिससे भारतीय किसानों की त्रासदी तथा उनका संघर्ष अपने यथार्थ में खुलकर आया है। (2000) में डॉ.हरिनिवास पांडे ने अपने शोधात्मक पुस्तक 'प्रगतिशील काव्यधारा और त्रिलोचन' में लिखा है कि –"हिन्दी साहित्य की इतिहस में काव्य–जगत में किसान के ऊपर जितना त्रिलोचन ने लिखा है उतना न तो पहले के किसी कवि ने लिखा न ही उनके समकालीन किसी कवि ने लिखा। किसान–जीवन का जो रूप अन्य लोगों के यहाँ दिखाई नहीं देता वही त्रिलोचन के यहाँ बड़े ही सहज रूप में उपलब्ध दिखाई देता है। उनका ग्रामीण किसान अपने वास्तविक रूप में धूप और ताप को सहन करता हुआ अपनी जीविका हेतु प्रकृति से लड़ता है।"[11] (2012) में अजीत प्रियदर्शी ने अपनी पुस्तक 'कवि त्रिलोचन' में लिखा है –"त्रिलोचन का मन किसान का मन है, और बादल से बहुत अपनापन होता है किसान का। क्योंकि बादल उनके जीवन में हरियाली लाते हैं। बादल से किसान के मन का उल्लास, उमंग और आकांक्षा जुड़ी है। आसमान में उमड़ते हुए काले बादलों को देखकर कवि का किसान मन प्रफुल्लित, उल्लसित हो जाता है।"[12] वर्तमान सामाजिक और आर्थिक स्तर पर भारतीय किसानों के भविष्य की चिंता को इस आलेख के माध्यम से उजागर करने का एक प्रयास है। यथासंभव सम्बंधित साहित्य की गुणवत्ता से अध्ययन करने के पश्चात् 2012 के बाद उपरोक्त विषय पर कोई शोध कार्य पुस्तक के रूप में प्राप्त नहीं हुआ है।

हिंदी में किसान जीवन को केंद्र बनाकर कविता करने वालो कवियों की कमी नहीं है। उनमें से अधिकांश कवि मध्यवर्गीय दृष्टि से किसान–जीवन के यथार्थ को देखते हैं। वह कभी समय की माँग तो कभी बौद्धिक सहानुभूति के कारण किसान–जीवन की कविता लिखते हैं। ऐसी कविताओं में कहीं कवि तटस्थ दर्शक की तरह होता है, तो कहीं किसानों का वकील। त्रिलोचन इनसे भिन्न एक अलग दृष्टि के कवि हैं,जो किसान जीवन की दयनीयता से द्रवित होकर उनकी व्यथा–कथा कहते हैं या किसान जीवन की सरलता, सादगी और पवित्रता का गौरव गान करते हैं। त्रिलोचन की कविताओ में व्यक्त किसान जीवन को निहारते हुए यह कहना काफी नहीं कि वह किसानों के जीवन संघर्ष की कविता है। यह भी देखना जरूरी है कि वे किसान जीवन के यथार्थ को किस दृष्टि से देखते और चित्रित करते हैं। कुछ कवि किसान को एक धारणा या विचार मात्र मानते हैं और कविता में उस पर बहस करते हैं। त्रिलोचन किसानों को जीते–जागते मानव समुदाय के रूप में देखते हैं। किसानों की आर्थिक स्थिति के अनुसार उसके अनेक स्तर हैं, कई तरह के भेद हैं। त्रिलोचन की कविता में गरीबी, शोषण और उत्पीड़न के शिकार किसान हैं। उनकी कविता में सबसे अधिक खेतिहर मजदूरों में स्त्रियों की जीवन दशा पर उनकी दृष्टि अधिक गयी है। नगई महारा, मोरई केवट, मंगल, निरहू, भिखरीया, अवतरीया, चंपा, सोना और सकुनी आदि ऐसे ही चरित्र हैं। इन चरित्रों के माध्यम से गांव में सबसे कठिन जिन्दगीं जीनेवाले लोगों के ठोस अनुभवों की एक दुनिया साकार रूप में हमारे सामने आती है। उनकी इस विशेषता को रेखांकित करते हुए यह कहा जा सकता है कि किसानों के परवान का ऐसा कारूणिक चित्रण या तो प्रेमचंद के कथा साहित्य में मिल सकते हैं या फिर नागार्जुन के काव्य संसार में।

हिन्दी कविता जिस समय आम जन–जीवन से दूर घोर व्यक्तिवादी और प्रचारवादी स्वरों से ग्रस्त थी, त्रिलोचन ने ठीक उसी समय 'धरती' (१९४५) काव्य–संग्रह के माध्यम से हिन्दी काव्य जगत में प्रवेश किया। इस संग्रह की कविताओं में अधिसंख्यक भारतीय किसानों के जीवन संघर्षो का नई चेतना के साथ कवि ने प्रस्तुत किया है। वह हिन्दी कविता के एक नवीन चरण व उसकी नवगति तथा नव चेतना का परिचायक है। उनकी कवितओं में मानव मुक्ति का सधा हुआ राग' त्रिलोचन की कविताओं में मिलता है। वे किसान जीवन के वास्तविक सुख–दुख, आशा–निराशा और संघर्षों को यथार्थता से अभिव्यक्त किया है। पूँजीवादी व्यवस्था और सरकार की गलत नीतियों के कारण किसानों को अपने श्रम का कभी भी वाजिब दाम नहीं मिलता। फलतः भूख, गरीबी और बीमारी के कारण उनका जीवन बत से बतर होता चला गया। त्रिलोचन इन्हीं विकृतियों के निराकरण के लिए किसानों की संघर्ष चेतना को युगीन चेतना के स्वरों से अनुप्राणित करते हैं। खेतिहरों की दयनीय दशा को देखकर त्रिलोचन उनके संघर्ष भाव को नई धारा देते हुए लिखते हैं –

"बिगुल बजाओ और बढ़ चलो।
यह सम्मुख मैदान पड़ा है
मानवता के मुक्ति–दूत तुम।
कौन तुम्हारे साथ अड़ा है
यह संघर्ष काल आया है।
आई जय यात्रा की बेला
तुम नूतन समाज के स्रष्टा।
पग–जीवन में ध्वनि गर्जन का।"[1]

त्रिलोचन किसानों के प्रति केवल बौद्धिक सहानुभूति व्यक्त नही करते, प्रत्युत किसानों के जीवन–संघर्षो की कविता लिखते हैं। उनमें मध्यवर्गीय तटस्थता और भावुकता के स्थान पर एक सजग किसान दृष्टि सक्रिय है, जो उन्होंने जनपदीय परिवेश में जीवन जीते, देखते–सुनते और समझते हुए अर्जित की है। त्रिलोचन किसान जीवन को उसकी समग्रता में देखने के पक्षधर है और इसके लिए श्रमजीवी (खेतिहर) जनता के हास–परिहास और दुःख–दैन्यों को पूर्ण प्रतिबद्धता से अंकित करते हैं। इनकी कविताओं का खेतिहर किसान, अभावों में हारता नहीं, अपितु श्रम और संघर्ष के बलबूते नये समाज की रचना करते है। इस संदर्भ में मैनेजर पांडे की यह टिप्पणी अत्यन्त समीचीन प्रतीत होती है –"त्रिलोचन किसान जीवन की करुण कहानी ही नहीं कहते, उसके स्वाभिमान की रक्षा को महत्व देते हैं। उनका किसान

अभाव में जीता है, लेकिन अभाव से हारता नहीं। उनकी कविता में किसान–जीवन का यथार्थ सच्चे और खरे रूप में हैय न वह भावुकता के उच्छावास में डूबा है न विचारधारा के आग्रह में ढका है।"[2]

श्रम सामाजिक विकास की धुरी है लेकिन पूँजीवादी समाज हमेशा से श्रम की अंतिम परिणति को वैयक्तिक पूँजी के रूप में नियोजित करता रहा है, जिसके कारण किसान आज नारकीय जीवन जी रहा है। त्रिलोचन इन स्थितियों से छुटकारा दिलाने के लिए किसानों के प्रति अपनी पूर्ण शक्ति के साथ तत्पर नजर आते हैं। जो लोग किसान–जीवन की कविता में केवल आशा और उल्लास देखना चाहते हैं, उनको लक्ष्य करते हुए त्रिलोचन ने लिखा है –

"अगर न हो हरियाली
कहाँ दिखा सकता हूं? फिर आँखों पर मेरी
चश्मा हरा नहीं है। यह नवीन अय्यारी
मुझे पसंद नहीं है। जो इसकी तैयारी
करते हों वे करें। अगर कोठरी अँधेरी
है तो उसे अँधेरी। समझने– कहने का
मुझको है अधिकार।"[3]

वे मानते हैं कि अगर किसान के जीवन में संघर्ष और दुख है तो उस वास्तविकता को झूठलाना गलत है। लेकिन त्रिलोचन आशावादी कवि घोर निराशा की लौ में आशा की लौ बुझा नहीं देते हैं कि 'दुख के तम में जीवन–ज्योति जला करती हैं'। वे किसान जीवन की करुण–कहानी नहीं कहते, उसके स्वाभिमान की रक्षा को महत्व देते हैं। उनका किसान अभाव में जीता है, अभाव से घबराता नहीं है। उनकी कविता में किसान जीवन का यथार्थ सच्चे और खरे रूप में अभिव्यक्त हुआ है। उनका किसान न तो भावुकता के उच्छावास में डूबा है, न विचारधारा के आग्रह से ढँका है।

त्रिलोचन की दृष्टि एक सजग किसान की दृष्टि है। जो उस जीवन को जीते, देखते–सुनते और समझते हुए कवि को मिली है, इसीलिए उनमें किसान जीवन से आत्मीयता और तादाम्य है, मानवीय संबंधों और भाव के बोध में भी उनकी वही दृष्टि सक्रिय रहती है। उनकी कविता में किसान जीवन के विविध पक्षों का चित्र है। वे चित्र अलग–अलग है,फिर भी उनमें संबंध है और उस संबंध से किसान जीवन की लय उभरती है। मध्यवर्गीय मानसिकता के कवियों की कविता में किसान बहुत कुछ करता है, लेकिन वह खेती करता नहीं दिखाई देता है। त्रिलोचन सबसे पहले किसान को किसान के रूप में, जीवन के लिए प्रकृति से संघर्ष करते हैं। अमुमन हम यह देखते हैं कि इनकी कवितओं में खेतिहर किसानों के जीवन–संघर्ष,गरीबी,अभाव पीड़ा के अलावा किसानों की मेहनतकश मजदूरी,कर्मठता,जीवन के सामूहिक श्रम के साथ जीवन संघर्षों का विस्तृत चित्र अपने काव्य में उकेरा है। त्रिलोचन के किसान बारिश न होने और अत्यधिक उमस (घाम) होने पर भी तनिक भी घबराते नहीं बल्कि उस परिस्थिति का डट कर सामना करते है। अपने मेहनत से गड्ढो से पानी निकाल कर अपने खेतों को सीचते हैं,जिसका यथार्थ रूप इन पंक्तियों में देखने को मिलता है –

"है धूप कठिन सिर ऊपर
थम गई हवा है जैसे
दोनों दूबों के ऊपर
रख पर खींचते पानी
उस मलिन हरी धरती पर
मिलकर वे दोनों प्रानी
दे रहे खेत में पानी।"[4]

तेज धूप तथा धरती की गर्मी, पसीने से लथ–पथ दंपति को कभी उजले बादल आकर उनको पलभर के लिए चौन दे जाते हैं तो कभी कभी पूर्वा हवा उनके पसीनों को हर लेती है। अविराम कर्मरत रहते हुए तब तक वे सांसों को संयत रखकर कुछ बातचीत भी करते हैं और पल दो पल को नयन भी मिलाते हैं। लेकिन यह नयन मिलना रोमांटिक नहीं बल्कि बल को थहाने के लिए होता है कि क्या और अधिक समय तक बेड़ी चल सकती है। वे अपनी थकान मिटाने और 'नवकर्म शक्ति' प्राप्त करने के लिए निकट के पेड़ की छाया में थोड़ा सुस्ताते भी हैं। इस प्रकार पूरी कविता खेत सिचाई के कठिन श्रम का समग्र चित्र सामने ला देती है। ऐसा हृदयग्राही चित्र तथा किसान जीवन से आत्मीयता और भोगे हुए जीवन से ही प्राप्त किया जा सकता है। कविता की गहराई तथा व्यापकता किसान दंपत्ति के श्रम और सहयोग में सन्नहित है। किसान दंपत्ति का परस्पर प्रेम, श्रम जीवन के बीच ही एक नई यात्रा को आयाम पाता है। उनके खेतों की हरियाली उनके और उनकी सहधर्मिणी के श्रम और सहयोग से स्मृतियों को ताजा कर देती हैं–

"वे हरे खेत– / है याद तुम्हें?
मैंने जोता तुमने बोया/धीरे–धीरे अंकुर आए
फिर और बढ़े/हमने तुमने मिलकर सींचा
फैली मनमोहन हरियाली /
धरती माता का रूप सजा
उन परम सलोने पौधों को /
हम दोनों ने मिल बड़ा किया।"[5]

इन पंक्तियों में त्रिलोचन ने किसान दम्पत्ति की फसल के प्रति जो चिंता व्यक्त की है वह कोरी कल्पना से भिन्न किसान जीवन की सहज चिंता के साथ व्यक्त हुई है। त्रिलोचन मूलतः किसान परिवेश से आते हैं इसीलिए उनकी अधिकांश कविताओं में किसान जीवन का हर्ष–विषाद अधिक गहराई के साथ उभरकर आया है।

"जैसे प्रकृति के बिना किसान का जीवन अधूरा होता है वैसे ही प्रकृति की रक्षा करने वाली किसान–जीवन की कविता भी प्रकृति चित्रण के बिना अधूरी होगी। यह बात किसान–जीवन की समग्रता का कवि जानता है। प्रकृति किसान–जीवन का अंग है। उससे किसान का संबंध मनवाने की बात नहीं है, अस्तित्व की अनिवार्यता है। त्रिलोचन का किसान मन प्रकृति में खूब रमता है। उनके यहाँ प्रकृति किसान–जीवन के अंग के रूप में है और उससे स्वतंत्र भी, उसका आकर्षक सौंदर्य है और विस्मयकारी रूप भी, सावन की बरसात का संगीत है और भादो का प्रचण्ड मेघ–गर्जन भी, प्रकृति से सहज आत्मीयता है और कठिन संघर्ष भी।"[6] निःसंदेह त्रिलोचन

की कवि दृष्टी प्रकृति में अधिक रमी है। फलतः प्रकृति के नाना रूप कवि के लिए जैसे संध्या, प्रातरू सर्दी, वर्षा, बसंत और शरद ऋतुओ के चित्र खेत–खलिहानों से जुड़कर किसान जीवन का मुख्य सहचर बन कर आया है। यह बहुत बड़ा सच है की बादल और वर्षा से किसानों का एक आत्मीय लगाव होता है कारण उससे किसानों को न सिर्फ जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है बल्कि उसी में उसका जीवन बसता है। कालिदास ने भी 'मेघदूतम' में मेघ की प्रशंसा करते हुए नहीं थकते हैं। ठीक उन्ही के अनुरूप त्रिलोचन का किसान जीवन बादलों की ओट में छिपा है। इस लिए उनके मन में खासकर वर्षा ऋतु में बादलों को न पाकर उनके मन में भय समा जाता है :–

"हँसता है अकाल तारों में दांत निकाले
मन किसान का मेरा, चौन नहीं पाता है
ताक रहे आकाश, नहीं जलधर की छाया
कहीं, दिखाई देती है, भय तन घर आया।"[7]

बादलों से किसान का बहुत अपनापन होता है क्योंकि बादल किसान के जीवन में हरियाली लाता है। बादल से किसान के मन की उमंग और आकांक्षा जुड़ी है। आसमान में उड़ते काले बादलों को देख कर मन प्रफुल्लित हो जाता है और वह कह उठता है–

"उठ किसानों, उठ किसान।
बादल घिर आये हैं
तेरे हरे भरे सावन के
साथी ये आये"[8]

किसान का मन अषाढ़ के बादलों का साक्षात्कर कर प्रफुल्लित हो उठता है कारण वह बादल को फसलों का जीवन दाता समझता है, वह महसूस करता है कि यह वही बादल है जो फसलों में दानों का रूप दे कर एक दिन जरुर मुस्कुरायेगा। तभी तो –

"हरा खेत जब लाहराएंगे /
हरी पताका फहराएँगे/
छिपा हुआ बादल तब उसमे /
रूप बदल कर मुस्काएंगे/
तेरे स्वप्नों के ए मीठे /
गीत आज छाएंगे।"[9]

प्रगतिशील कवियों को किसान जीवन से अधिक लगाव है। वे जनपदों की ओर पर्यटन के भाव से उन्मुख नहीं होते, अपितु वे उनमें जीवन संघषों से लड़ने की शक्ति पैदा करते हैं। वे सामूहिक रूप से किसानों को उनकी वास्तविक शक्ति से परिचित करवाकर इस अन्यायपूर्ण व्यवस्था को बदलने का आवाहन करते हुए कहते हैं –

"जीवित मानव– महिमा तुम से /
तुम कौन जीवन के धर्ता
तुम मानव जीवन के कर्ता /
x x x x x
विपुल शक्तियों के निधान तुम /
अपमानित जीते धरती पर
अपना शक्ति – प्रकाश दिखा दो/
क्षय कर अत्याचार अनय का
श्रमिक, कृषक भोगे वह अमृत /
जो फल है जीवन मंथन का।"[10]

प्रगतिशील कविता सामाजिक प्रतिबद्धता की कविता है। उसमें कोरी बौद्धिक सहानुभूति न होकर दुःख–दर्द भरे कृषक समाज के संघर्षपूर्ण जीवन के गहरे अवसादों की पीड़ा है और इस पीड़ा के मूल में धरती का न्यायोचित विभाजन न होना है। त्रिलोचन ने धरती संग्रह के माध्यम से अन्यायपूर्ण व्यवस्था के प्रति आवाज उठाई है। खेतों के वैभव को अपने श्रमजल से सिंचित,श्रमरत किसानों का वेदनाभाव जितनी सरलता और सहजता से अंकित है उससे कवि सामाजिक लक्ष्य की ओर बढ़ने की अप्रितम ईमानदारी सामाजिक यथार्थता के साथ व्यक्त हुई है। धरती के कवि के स्वरों में दर्द और आस्था का सुन्दर संयोग है। जीवन के मधुर तिक्त स्वाद से परिचित इन प्राथमिक कविताओं में भी त्रिलोचन शास्त्री ने अपनी राह चलने का प्रयत्न किया है।

निष्कर्ष

त्रिलोचन की में कविताओं किसान जीवन के विविध पक्षो के मूल्यांकन के आधार पर यह कह सकते हैं कि उनकी दृष्टि किसान–जीवन को समग्रता में देखती है। त्रिलोचन अपने जनपदों के प्रति जड़मोह का शिकार नहीं होते, अपितु किसानों पर सामंतों द्वारा थोपी गई जटिल कुव्यवस्थाओं का पर्दाफाश करते हैं। वे किसानों को उनकी श्रमशक्ति से परिचित करवाकर उसकी संघर्ष चेतना को दीप्त करने की प्रेरणा देते हैं। श्रम से मार खाए किसानों की मानसिकता को उनके मूल अधिकारों के प्रति जागृत करते हैं जिससे वे स्वस्थ जीवन जी सकें। त्रिलोचन इसी सजग किसान–दृष्टि से प्रकृति,समाज और विश्व को देखते है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *त्रिलोचन– धरती, नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद, दूसरा संस्करण –1977 , पृ. सं. – 15*
2. *पाण्डेय मैनेजर,हिन्दी कविता का अतीत और वर्तमान, वाणी प्रकाशन,दिल्ली, संस्करण –2013, पृ. सं – 113*
3. *त्रिलोचन, दिगन्त, जगत शंखधर, वाराणसी, संस्करण – 1957, पृ. सं –25*
4. *त्रिलोचन, धरती, नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद, दूसरा संस्करण –1977, पृ. सं. –18*
5. *त्रिलोचन, धरती, नीलाभ प्रकाशन,इलाहाबाद, दूसरा संस्करण –1977, पृ. सं –31–32*
6. *पाण्डेय मैनेजर, हिन्दी कविता का अतीत और वर्तमान, पृ. सं 116*
7. *त्रिलोचन, अनकहनी भी कुछ कहनी है,राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली,संस्करण–1985, पृ. सं –75*
8. *त्रिलोचन, धरती, नीलाभ प्रकाशन,इलाहाबाद, दूसरा संस्करण – 1977, पृ. सं –126*
9. *त्रिलोचन, धरती, नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद, दूसरा संस्करण –1977, पृ. सं –128*
10. *त्रिलोचन, धरती नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद, दूसरा संस्करण –1977, पृ. सं – 50*
11. *पांडे डॉ. हरिनिवास, प्रगतिशील काव्यधारा और त्रिलोचन, सहित्य भंडार, इलाहाबाद–2012 पृ. सं 111*
12. *प्रियदर्शी अजीत,कवि त्रिलोचन,विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी 2000, पृ. सं 47*